शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

रघुवंश में आदर्श राजा के गुणों का चित्रण

डॉ. परिमल मंडल, असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, स्वर्णमयी जोगेंद्रनाथ महाविद्यालय, अमदाबाद, नंदीग्राम, पूर्बा मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल

सारांश (Abstract)

महाकवि कालिदास द्वारा रचित "रघुवंशम्" संस्कृत साहित्य के महाकाव्य-परंपरा का एक अद्वितीय ग्रंथ है, जिसमें सूर्यवंश की उन्नीस पीढ़ियों के राजाओं का चरित्र-चित्रण किया गया है। यह शोध-पत्र रघुवंश महाकाव्य में वर्णित आदर्श राजा की अवधारणा का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। कालिदास ने दिलीप, रघु, अज, दशरथ तथा राम जैसे राजाओं के माध्यम से एक आदर्श शासक के गुणों—प्रजापालन, सत्यनिष्ठा, धर्मपरायणता, शौर्य, त्याग, न्यायप्रियता, दानशीलता तथा कर्तव्यनिष्ठा—का सजीव चित्रण किया है। यह अध्ययन प्राथमिक स्रोत के रूप में रघुवंशम् के मूल संस्कृत श्लोकों का प्रयोग करते हुए यह प्रतिपादित करता है कि कालिदास का राजा-चरित्र केवल साहित्यिक कल्पना नहीं, अपितु अर्थशास्त्र, मनुस्मृति तथा रामायण-महाभारत की राजधर्म-परंपरा से प्रभावित एक सुव्यवस्थित राजनीतिक-नैतिक दर्शन है। यह पत्र तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए यह भी दर्शाता है कि रघुवंश का आदर्श राजा आधुनिक शासन-व्यवस्था तथा नेतृत्व-सिद्धांत के लिए भी प्रासंगिक है। अध्ययन के अंत में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कालिदास ने "प्रजाहिताय" के सिद्धांत को राजधर्म का केंद्रीय तत्व मानते हुए एक ऐसे आदर्श राजा की परिकल्पना की है, जो शक्ति और करुणा, वैभव और त्याग, तथा शासन और सेवा के मध्य संतुलन स्थापित करता है।

कुंजी शब्द (Keywords): रघुवंशम्, कालिदास, आदर्श राजा, राजधर्म, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, प्रजापालन, संस्कृत महाकाव्य

1. भूमिका (Introduction)

संस्कृत साहित्य की महाकाव्य-परंपरा में महाकवि कालिदास का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। उनकी काव्य-प्रतिभा ने जिन रचनाओं को जन्म दिया, उनमें "रघुवंशम्" महाकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह महाकाव्य उन्नीस सर्गों में विभक्त है और इसमें सूर्यवंश की अनेक पीढ़ियों के राजाओं का चरित्र-चित्रण किया गया है। इस वंश-परंपरा में दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक के राजाओं की गाथा वर्णित है, किंतु काव्य का केंद्रीय आकर्षण उन आदर्श राजाओं का चित्रण है, जिन्होंने धर्म, न्याय, प्रजापालन तथा त्याग के आदर्शों को अपने जीवन में साकार किया।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

कालिदास स्वयं मंगलाचरण में इस महाकाव्य की रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं—

"वैखानसमते तस्मिन्नुपचारं समाप्तवान्।
कदा रघूणामन्वयं वक्ष्ये राजर्षिकर्मणाम्।।"

अर्थात् कालिदास ने इस महाकाव्य में सूर्यवंशी राजर्षियों के कर्मों का वर्णन करने का संकल्प लिया है। यह उल्लेखनीय है कि कालिदास ने "राजर्षि" शब्द का प्रयोग किया है, जो यह संकेत देता है कि रघुवंश के राजा केवल शासक ही नहीं, अपितु ऋषितुल्य आचरण वाले महापुरुष भी थे (कालिदास, रघुवंशम्, प्रथम सर्ग)।

आदर्श राजा की अवधारणा भारतीय सांस्कृतिक चेतना में अत्यंत प्राचीन काल से विद्यमान रही है। वेद, उपनिषद, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा महाकाव्यों में राजा के कर्तव्यों, गुणों तथा उत्तरदायित्वों का विस्तृत विवेचन मिलता है। रघुवंश में कालिदास ने इस परंपरा को काव्यात्मक सौंदर्य के साथ प्रस्तुत करते हुए एक ऐसे राजा की कल्पना की है, जो शक्तिशाली होते हुए भी विनम्र, वैभवशाली होते हुए भी त्यागी, तथा प्रतापी होते हुए भी प्रजावत्सल है।

यह शोध-पत्र रघुवंश महाकाव्य के मूल संस्कृत श्लोकों के आलोक में आदर्श राजा के उन गुणों का विश्लेषण करेगा, जिन्हें कालिदास ने अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से दिलीप, रघु, अज, दशरथ तथा राम के चरित्रों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया जाएगा कि कालिदास की राजधर्म संबंधी दृष्टि किस प्रकार भारतीय राजनीतिक चिंतन की समृद्ध परंपरा से जुड़ी हुई है।

2. शोध उद्देश्य, महत्त्व एवं पद्धति (Objectives, Significance and Methodology)

2.1 शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. रघुवंश महाकाव्य में वर्णित आदर्श राजा की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. दिलीप, रघु, अज, दशरथ एवं राम के चरित्रों के माध्यम से आदर्श राजा के गुणों की पहचान करना।
3. कालिदास द्वारा प्रस्तुत राजधर्म को भारतीय धर्मशास्त्रीय तथा राजनीतिक परंपरा के संदर्भ में स्थापित करना।
4. रघुवंश के आदर्श राजा की अवधारणा की समकालीन शासन-व्यवस्था में प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
5. मूल संस्कृत श्लोकों के आधार पर एक प्रामाणिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।

2.2 शोध का महत्त्व

वर्तमान समय में, जब विश्व भर में नेतृत्व और शासन-व्यवस्था के संकट देखे जा रहे हैं, प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित आदर्श शासन के सिद्धांतों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। रघुवंश जैसे महाकाव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से

महत्त्वपूर्ण हैं, अपितु इनमें निहित राजनीतिक-नैतिक दर्शन आधुनिक प्रशासन तथा नेतृत्व-सिद्धांत के लिए भी उपयोगी दिशा-निर्देश प्रस्तुत करते हैं। यह शोध-पत्र इसी दृष्टिकोण से कालिदास के काव्य में निहित शासन-कला (statecraft) के तत्वों को उद्घाटित करने का प्रयास करता है।

2.3 शोध पद्धति

इस शोध-पत्र में गुणात्मक (qualitative) तथा विश्लेषणात्मक-वर्णनात्मक (analytical-descriptive) पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में कालिदास के रघुवंशम् के मूल संस्कृत श्लोकों का प्रयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों के रूप में मनुस्मृति, कौटिल्य अर्थशास्त्र, वाल्मीकि रामायण तथा अन्य आलोचनात्मक ग्रंथों का सहारा लिया गया है। पाठ-विश्लेषण (textual analysis) तथा तुलनात्मक अध्ययन (comparative study) की पद्धतियों को अपनाते हुए यह प्रयास किया गया है कि रघुवंश में वर्णित राजाओं के चरित्र-चित्रण से आदर्श राजा के गुणों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाए। उद्धरण-शैली (citation style) के रूप में APA पद्धति का पालन करते हुए, हिंदी तथा संस्कृत स्रोतों का उल्लेख किया गया है।

3. रघुवंश महाकाव्य: स्वरूप एवं पृष्ठभूमि (The Raghuvamsha: Form and Background)

3.1 कालिदास और उनका काव्य-वैभव

महाकवि कालिदास का समय-निर्धारण विद्वानों के मध्य विवाद का विषय रहा है, किंतु अधिकांश विद्वान उन्हें गुप्तकाल (चतुर्थ-पंचम शताब्दी) से संबद्ध मानते हैं (द्विवेदी, 2010)। कालिदास ने काव्य तथा नाटक दोनों क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया। उनकी रचनाओं में "अभिज्ञानशाकुन्तलम्", "मेघदूतम्", "कुमारसम्भवम्", "मालविकाग्निमित्रम्", "विक्रमोर्वशीयम्" तथा "रघुवंशम्" प्रमुख हैं। इनमें रघुवंशम् को महाकवि की सर्वोत्कृष्ट रचना माना जाता है, क्योंकि इसमें कालिदास की काव्य-कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है (शुक्ल, 2005)।

3.2 रघुवंश की संरचना

रघुवंश उन्नीस सर्गों में विभक्त महाकाव्य है, जिसमें सूर्यवंश के राजाओं की वंश-परंपरा का वर्णन किया गया है। इस काव्य को मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. **प्रथम भाग (सर्ग 1–9):** इसमें दिलीप, रघु तथा अज के चरित्रों का वर्णन है।
2. **द्वितीय भाग (सर्ग 10–15):** इसमें दशरथ तथा राम के जीवन-चरित्र, विशेषतः रामायण की कथा का संक्षिप्त वर्णन है।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

3. **तृतीय भाग (सर्ग 16–19):** इसमें कुश से लेकर अग्निवर्ण तक के उत्तरवर्ती राजाओं का वर्णन है, जिसमें वंश के पतन की झलक भी मिलती है।

यह उल्लेखनीय है कि कालिदास ने काव्य के आरंभिक तथा मध्य भाग में आदर्श राजाओं का चित्रण किया है, जबकि अंतिम सर्गों में राजवंश के क्रमिक ह्रास तथा अग्निवर्ण जैसे विलासी राजा के चरित्र के माध्यम से यह संकेत दिया है कि आदर्श से विचलन का परिणाम पतन ही होता है (पाण्डेय, 2012)।

3.3 काव्य का उद्देश्य

रघुवंश केवल एक वंशानुक्रमिक इतिहास-काव्य नहीं है, अपितु यह एक आदर्श राजनीतिक-नैतिक व्यवस्था की प्रस्तुति भी है। कालिदास ने इस काव्य के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि राजपद केवल भोग तथा सत्ता का साधन नहीं, अपितु प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व तथा धर्माचरण का माध्यम है। प्रथम सर्ग में ही कालिदास दिलीप के विषय में कहते हैं—

"प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥" (रघुवंशम्, 1.24)

अर्थात् दिलीप प्रजा को अनुशासन प्रदान करने, उनकी रक्षा करने तथा उनका भरण-पोषण करने के कारण वास्तव में उनका पिता था, जबकि उनके जैविक माता-पिता तो केवल उनके जन्म के निमित्त मात्र थे। इस श्लोक में कालिदास ने राजा और प्रजा के संबंध को पिता-पुत्र के समान आत्मीय संबंध के रूप में प्रस्तुत किया है, जो कि आदर्श राजा की अवधारणा का मूल आधार है।

4. भारतीय राजनीतिक चिंतन में आदर्श राजा की अवधारणा (The Concept of the Ideal King in Indian Political Thought)

रघुवंश में वर्णित आदर्श राजा की अवधारणा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय धर्मशास्त्रीय तथा राजनीतिक परंपरा में राजधर्म की अवधारणा को संक्षेप में समझा जाए।

4.1 वैदिक तथा उपनिषदिक परंपरा में राजा

वैदिक साहित्य में राजा को "प्रजापति" के समान माना गया है, जो प्रजा के कल्याण के लिए उत्तरदायी है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में राजसूय यज्ञ के प्रसंग में राजा के कर्तव्यों का उल्लेख मिलता है। शतपथ ब्राह्मण में यह कहा गया है कि राजा को प्रजा की रक्षा के लिए दंड-शक्ति प्राप्त होती है, किंतु इस शक्ति का प्रयोग धर्मानुसार ही होना चाहिए (शर्मा, 2008)।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

4.2 मनुस्मृति में राजधर्म

धर्मशास्त्रों में मनुस्मृति का राजधर्म-विषयक विवेचन सर्वाधिक व्यवस्थित माना जाता है। मनु के अनुसार राजा में इन्द्र, वायु, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र तथा कुबेर—इन आठ लोकपालों के अंश विद्यमान होते हैं (मनुस्मृति, 7.4-5)। मनु के अनुसार राजा का प्रमुख कर्तव्य है—

"प्रजानां रक्षणं धर्म्यं राज्ञः श्रेष्ठतमं मतम्।
...इति स्थितिरियं धर्म्या राज्ञां प्रोक्ता मनीषिभिः॥" (मनुस्मृति, 7.144 के भावानुसार)

मनु ने राजा के लिए दंडनीति, कर-व्यवस्था, न्याय-प्रशासन तथा प्रजापालन के विस्तृत नियम प्रतिपादित किए हैं। मनु के अनुसार राजा को इन्द्रियजयी, विद्वानों का आदर करने वाला तथा प्रजाहित को सर्वोपरि रखने वाला होना चाहिए (चतुर्वेदी, 2011)।

4.3 कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजधर्म

आचार्य कौटिल्य ने अपने "अर्थशास्त्र" में राजा के कर्तव्यों को अत्यंत व्यावहारिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। कौटिल्य का प्रसिद्ध सूत्र है—

"प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम्॥" (अर्थशास्त्र, 1.19.34)

अर्थात् प्रजा के सुख में ही राजा का सुख निहित है, और प्रजा के हित में ही राजा का हित है। राजा को अपनी व्यक्तिगत प्रसन्नता को प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए, अपितु प्रजा की प्रसन्नता को ही अपनी प्रसन्नता मानना चाहिए (कंगले, 1965)। यह सूत्र भारतीय राजनीतिक चिंतन में "प्रजाकल्याणकारी राज्य" (welfare state) की प्राचीनतम तथा स्पष्टतम अभिव्यक्ति मानी जाती है।

4.4 महाभारत तथा रामायण में राजधर्म

महाभारत के शांतिपर्व में भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को दिया गया राजधर्मोपदेश भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसमें राजा को धर्म, अर्थ तथा काम के त्रिवर्ग में संतुलन स्थापित करने वाला बताया गया है (शांतिपर्व, अध्याय 56-130)। वाल्मीकि रामायण में राम का चरित्र आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने प्रजा के हित के लिए अपने व्यक्तिगत सुख का त्याग तक कर दिया। कालिदास पर इन दोनों महाकाव्यों का गहरा प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, विशेषतः रघुवंश के दशरथ तथा राम संबंधी सर्गों में (त्रिपाठी, 2009)।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

इस प्रकार, कालिदास का रघुवंश इस समृद्ध परंपरा का काव्यात्मक विस्तार है, जिसमें धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों को चरित्र-चित्रण के माध्यम से जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है।

5. रघुवंश के राजाओं में आदर्श गुणों का चित्रण (Portrayal of Ideal Qualities in the Kings of Raghuvamsha)

5.1 दिलीप: प्रजापालन एवं आत्मत्याग का आदर्श

रघुवंश के प्रथम एवं द्वितीय सर्ग में वर्णित राजा दिलीप का चरित्र आदर्श राजा की सर्वप्रथम तथा सबसे प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। दिलीप निःसंतान होने के कारण दुःखी थे, और इस समस्या के समाधान हेतु वे अपनी पत्नी सुदक्षिणा के साथ वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में गए। वहाँ गुरु वसिष्ठ ने उन्हें बताया कि उनकी संतानहीनता का कारण यह है कि एक बार उन्होंने अनजाने में कामधेनु की उपेक्षा कर दी थी। इसका प्रायश्चित करने के लिए दिलीप को कामधेनु की पुत्री नंदिनी की सेवा करने का आदेश दिया गया।

दिलीप की सेवा-भावना का चरम उदाहरण उस प्रसंग में मिलता है, जब एक सिंह नंदिनी पर आक्रमण करता है। दिलीप, जो शस्त्रधारी होते हुए भी सिंह पर वार करने में असमर्थ हो जाते हैं (क्योंकि सिंह ने अपनी दिव्य शक्ति से उन्हें स्तंभित कर दिया था), अपने प्राणों के बदले नंदिनी के प्राणों की रक्षा हेतु स्वयं को अर्पित कर देते हैं। वे सिंह से कहते हैं—

"मामेव विक्रीणीष्व त्वं शस्त्रं तावदुपाहर।
नैतच्छस्त्रभृतां धर्म्यं यदार्तेषु प्रसह्यता।।" (रघुवंशम्, 2.55 के भावानुसार)

इस प्रसंग में दिलीप का चरित्र यह दर्शाता है कि सच्चा राजा वह है, जो अपने कर्तव्य-पालन के लिए अपने प्राणों का भी त्याग करने को तत्पर रहता है। यहाँ कालिदास ने राजा के "आत्मत्याग" गुण को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस घटना से प्रसन्न होकर नंदिनी दिलीप को वरदान देती है, और अंततः उन्हें रघु नामक पुत्र की प्राप्ति होती है।

दिलीप के चरित्र में निम्नलिखित आदर्श गुण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं—

(क) प्रजापालन: प्रथम सर्ग में ही कालिदास दिलीप के शासन का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनके राज्य में प्रजा सुखी थी, अकाल नहीं पड़ता था, तथा अपराध की मात्रा नगण्य थी। कालिदास लिखते हैं—

"स सर्वान्येव कर्माणि नित्यमन्वग्रहग्रहम्।
... " (रघुवंशम्, 1.20 के भावानुसार वर्णन)

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

इसमें दिलीप के प्रजापालन-कार्य के प्रति समर्पण का उल्लेख है।

(ख) समदर्शिता: दिलीप को न्यायप्रिय राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जो प्रजा के साथ समान व्यवहार करते थे और किसी के साथ पक्षपात नहीं करते थे।

(ग) धर्मपरायणता: वसिष्ठ आश्रम में नंदिनी की सेवा स्वीकार करना यह दर्शाता है कि दिलीप गुरु-आज्ञा का पालन करने वाले तथा धर्म-कर्तव्य के प्रति निष्ठावान राजा थे।

(घ) आत्मत्याग: नंदिनी की रक्षा हेतु अपने प्राणों को अर्पित करने का प्रसंग दिलीप के सर्वोच्च त्याग-भाव को दर्शाता है।

5.2 रघु: शौर्य, दानशीलता एवं विजिगीषा का आदर्श

रघु का चरित्र रघुवंश के तृतीय से अष्टम सर्ग में विस्तार से वर्णित है। रघु का जन्म दिलीप तथा सुदक्षिणा के दीर्घ तप के फलस्वरूप हुआ था। रघु का चरित्र मुख्यतः शौर्य, विजिगीषा (विजय की इच्छा) तथा दानशीलता के गुणों से युक्त है।

(क) दिग्विजय एवं शौर्य: रघु ने अपने राज्याभिषेक के पश्चात् संपूर्ण भारतवर्ष की दिग्विजय की। कालिदास ने चतुर्थ सर्ग में रघु की इस दिग्विजय-यात्रा का विस्तृत तथा भौगोलिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है। यह उल्लेखनीय है कि रघु की विजय-यात्रा का उद्देश्य साम्राज्य-विस्तार मात्र नहीं था, अपितु धर्म-स्थापना तथा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करके शत्रुओं को अधीन बनाना था, न कि उनका विनाश करना। कालिदास लिखते हैं कि रघु विजित राजाओं का राज्य छीनते नहीं थे, अपितु उनसे केवल कर वसूल करके उन्हें पुनः उनके राज्य पर प्रतिष्ठित कर देते थे—यह उदारता का प्रतीक है।

(ख) विश्वजित यज्ञ एवं दानशीलता: रघु के चरित्र का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग "विश्वजित यज्ञ" का है, जिसमें उन्होंने अपनी संपूर्ण संपत्ति दान कर दी, यहाँ तक कि अपने राजकीय उपकरण भी दान कर दिए। इसके पश्चात् जब वररुचि (कौत्स) नामक ब्राह्मण अपने गुरु-दक्षिणा के लिए चौदह करोड़ स्वर्ण-मुद्राओं की माँग लेकर आए, तो रघु के पास देने के लिए कुछ भी शेष नहीं था। किंतु रघु ने अपने अतिथि को खाली हाथ लौटाने के बजाय कुबेर पर आक्रमण करने का संकल्प लिया। कालिदास लिखते हैं—

"याच्ञाभङ्गभयादीशं शरण्यं समुपेयुषः।
धनदस्य वशे स्थित्वा कथं मृष्येऽहमीदृशम्।।" (रघुवंशम्, 5.31 के भावानुसार)

अर्थात् रघु ने यह विचार किया कि एक याचक की याचना को अस्वीकार करना उनके लिए असहनीय है, चाहे इसके लिए उन्हें स्वयं देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर से युद्ध ही क्यों न करना पड़े। इस प्रसंग से रघु की अपार दानशीलता, अतिथि-सत्कार की

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

भावना तथा वचन-पालन के प्रति दृढ़ निश्चय प्रकट होता है। अंततः कुबेर स्वयं रात्रि में रघु के कोष में स्वर्ण-मुद्राओं की वर्षा कर देते हैं, जिससे रघु की सत्यनिष्ठा तथा कर्तव्यपरायणता को दैवीय मान्यता प्राप्त होती है।

(ग) विनम्रता: अपार वैभव तथा विजय के बावजूद रघु का चरित्र अहंकार-रहित दिखाया गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि कालिदास के अनुसार आदर्श राजा शक्ति के साथ-साथ विनम्रता का भी परिचायक होना चाहिए।

5.3 अज: प्रेम, वीरता एवं शोक में संयम का आदर्श

अज, रघु के पुत्र, का चरित्र रघुवंश के पंचम से अष्टम सर्ग में वर्णित है। अज का चरित्र मुख्यतः स्वयंवर-प्रसंग तथा इंदुमती के प्रति उनके अनन्य प्रेम के माध्यम से उद्घाटित होता है।

(क) शौर्य: विदर्भ नरेश भोज की पुत्री इंदुमती के स्वयंवर के अवसर पर, जब अन्य राजा अज से ईर्ष्यावश युद्ध के लिए तत्पर हो जाते हैं, तब अज अकेले ही उन सबका सामना करते हैं और अपनी अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हैं। यह प्रसंग अज के अद्वितीय शौर्य तथा युद्ध-कौशल को दर्शाता है।

(ख) पत्नी के प्रति निष्ठा एवं शोक में संयम: अज के चरित्र का सर्वाधिक मार्मिक अंश तब आता है, जब इंदुमती की आकस्मिक मृत्यु नारद के शाप के कारण एक दिव्य पुष्पमाला के गिरने से हो जाती है। अज का शोक अत्यंत हृदयस्पर्शी ढंग से चित्रित किया गया है, जो यह दर्शाता है कि आदर्श राजा भी सामान्य मनुष्य के समान भावनाओं से युक्त होता है, किंतु वह इस शोक के बावजूद अपने राजकीय कर्तव्यों का त्याग नहीं करता। कालिदास आठवें सर्ग में अज के विलाप का अत्यंत करुण चित्रण करते हैं, तत्पश्चात् मुनि वसिष्ठ के पुत्र के उपदेश से अज को शांति प्राप्त होती है, और वे अपने पुत्र दशरथ को राज्य सौंपकर अंततः प्रायोपवेशन (उपवास द्वारा प्राणत्याग) करते हैं।

अज का चरित्र यह सिखाता है कि आदर्श राजा को अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख से ऊपर उठकर राजकीय उत्तरदायित्वों का निर्वहन करना चाहिए, और अंततः जब उत्तराधिकारी सक्षम हो जाए, तो राज्य का भार सौंपकर स्वयं वानप्रस्थ अथवा संन्यास की ओर अग्रसर होना चाहिए—यह भारतीय आश्रम-व्यवस्था के अनुरूप है (मिश्र, 2007)।

5.4 दशरथ: कर्तव्यनिष्ठा एवं सत्यप्रतिज्ञा का आदर्श

दशरथ का चरित्र रघुवंश के नवम सर्ग में मुख्यतः शिकार के प्रसंग के माध्यम से चित्रित है, जहाँ अनजाने में श्रवण कुमार का वध हो जाता है। यद्यपि रघुवंश में दशरथ का चरित्र-चित्रण वाल्मीकि रामायण की तुलना में संक्षिप्त है, तथापि कालिदास ने इस प्रसंग के माध्यम से दशरथ में निम्नलिखित गुणों का चित्रण किया है—

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

(क) पश्चाताप एवं नैतिक चेतना: अनजाने में हुई हत्या के लिए दशरथ का गहन पश्चाताप यह दर्शाता है कि आदर्श राजा में अपने कृत्यों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना होनी चाहिए, चाहे वह कृत्य जानबूझकर किया गया हो या अनजाने में।

(ख) सत्यनिष्ठा: यद्यपि रघुवंश में दशरथ द्वारा राम को वनवास भेजने का प्रसंग संक्षेप में ही आया है (क्योंकि यह मुख्यतः रामायण की कथा है), किंतु कालिदास इसे दशरथ की सत्यप्रतिज्ञा-निष्ठा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। दशरथ अपनी पत्नी कैकेयी को दिए गए वचन का पालन करने के लिए अपने प्रिय पुत्र राम को वनवास भेजने का अत्यंत कठिन निर्णय लेते हैं, जो यह सिद्ध करता है कि आदर्श राजा के लिए वचन-पालन व्यक्तिगत सुख से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।

5.5 राम: मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में सर्वगुण-संपन्न आदर्श राजा

रघुवंश के दशम से पंचदश सर्ग तक राम का चरित्र वर्णित है, जो संपूर्ण काव्य में आदर्श राजा के गुणों का सर्वाधिक व्यापक तथा समग्र चित्रण प्रस्तुत करता है। कालिदास ने राम को केवल विष्णु के अवतार के रूप में ही नहीं, अपितु एक आदर्श मानव-शासक के रूप में भी चित्रित किया है।

(क) पितृ-आज्ञा-पालन: राम बिना किसी विरोध के पिता की आज्ञा स्वीकार कर वनवास हेतु प्रस्थान करते हैं। यह पितृभक्ति तथा आज्ञापालन का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत करता है।

(ख) धैर्य एवं संयम: वनवास के दौरान अनेक कष्टों तथा सीता-हरण जैसी विपत्तियों का सामना करते हुए भी राम अपने धैर्य को नहीं खोते।

(ग) न्यायप्रियता तथा प्रजाहित की सर्वोच्चता: राम के चरित्र का सर्वाधिक विवादास्पद, किंतु राजधर्म की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण प्रसंग सीता-त्याग का है, जिसका वर्णन चतुर्दश सर्ग में मिलता है। जब एक धोबी द्वारा सीता के चरित्र पर लोकापवाद (सामाजिक आक्षेप) उठाया जाता है, तब राम अपने व्यक्तिगत सुख तथा पत्नी के प्रति प्रेम की तुलना में प्रजा की मान्यता तथा राजधर्म को प्राथमिकता देते हुए अत्यंत कठोर, किंतु राजधर्म-सम्मत निर्णय लेते हैं। कालिदास इस प्रसंग में लिखते हैं—

"अवध्यतां वैशसानाच्च सर्वप्राणभृतां भवान्।
संहृतस्तेन कस्त्वं वा को वाहं वद तत्त्वतः॥"

(यह श्लोक-भाव वाल्मीकि रामायण से प्रभावित है तथा कालिदास इस प्रसंग में लोकापवाद के भय से राम के आंतरिक द्वंद्व को दर्शाते हैं।)

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

यद्यपि आधुनिक दृष्टिकोण से यह प्रसंग विवाद उत्पन्न करता है, तथापि प्राचीन भारतीय राजधर्म-सिद्धांत की दृष्टि से यह इस बात का प्रतीक है कि आदर्श राजा के लिए प्रजा की मान्यता तथा राज्य की मर्यादा व्यक्तिगत सुख से अधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती थी—यह "राजा प्रजा का सेवक है, स्वामी नहीं" की अवधारणा को पुष्ट करता है (पाण्डेय, 2012)।

(घ) प्रशासनिक कुशलता: चतुर्दश सर्ग में ही कालिदास राम के शासन का वर्णन करते हुए बताते हैं कि उनके राज्य में "रामराज्य" की अवधारणा साकार हुई थी, जहाँ कोई अकाल मृत्यु नहीं होती थी, प्रजा सुखी तथा समृद्ध थी, तथा सामाजिक व्यवस्था सुचारु रूप से संचालित होती थी।

5.6 अन्य राजा तथा वंश का पतन: नकारात्मक दृष्टांत के रूप में तुलना

रघुवंश के अंतिम सर्गों (16-19) में कालिदास ने अतिथि, निषध, नल, नभ आदि राजाओं का संक्षिप्त वर्णन करते हुए अंततः अग्निवर्ण के चरित्र में राजवंश के पतन को चित्रित किया है। अग्निवर्ण एक विलासी, कर्तव्यविमुख तथा भोगासक्त राजा के रूप में चित्रित है, जो राज्य के प्रशासनिक कार्यों की उपेक्षा करता है और अंततः क्षयरोग से उसकी मृत्यु हो जाती है। यह चरित्र-चित्रण, आदर्श राजाओं (दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम) के विपरीत, कालिदास की इस मान्यता को स्पष्ट करता है कि जब राजा अपने कर्तव्यों से विमुख होकर केवल भोग-विलास में लिप्त हो जाता है, तो उसका तथा उसके राज्य का पतन अवश्यंभावी है (शुक्ल, 2005)। इस प्रकार अग्निवर्ण का चरित्र एक "प्रतिमान" (counter-model) के रूप में कार्य करता है, जो आदर्श राजा के गुणों को और भी स्पष्ट रूप से उभारता है।

6. आदर्श राजा के गुणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical Study of the Qualities of the Ideal King)

उपर्युक्त चरित्र-विश्लेषण के आधार पर रघुवंश में वर्णित आदर्श राजा के गुणों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

6.1 प्रजापालन एवं पितृवत् व्यवहार

रघुवंश में सर्वाधिक बार दोहराया गया गुण है—राजा का प्रजा के प्रति पितृवत् व्यवहार। प्रथम सर्ग के उपर्युक्त श्लोक "प्रजानां विनयाधानाद्..." इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। यह गुण न केवल दिलीप में, अपितु रघु, अज तथा राम में भी समान रूप से परिलक्षित होता है। कालिदास बार-बार यह दर्शाते हैं कि आदर्श राजा प्रजा को अपनी संतान के समान मानता है और उनके सुख-दुःख में सहभागी होता है।

6.2 सत्य एवं वचन-पालन

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

रघु का कुबेर से युद्ध का संकल्प तथा दशरथ का कैकेयी को दिया वचन निभाना—दोनों ही प्रसंग सत्यनिष्ठा तथा वचन-पालन के आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय राजधर्म परंपरा में "सत्यव्रत राजा" की अवधारणा अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी गई है, और कालिदास इस परंपरा को अपने काव्य में सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं।

6.3 त्याग एवं दानशीलता

दिलीप का अपने प्राणों का त्याग, रघु का विश्वजित यज्ञ में संपूर्ण संपत्ति का दान—ये दोनों प्रसंग राजा के त्याग-गुण को उद्घाटित करते हैं। यह उल्लेखनीय है कि कालिदास के अनुसार आदर्श राजा के लिए वैभव संचय का साधन नहीं, अपितु दान का माध्यम है।

6.4 शौर्य एवं वीरता

रघु की दिग्विजय-यात्रा तथा अज का स्वयंवर-युद्ध—ये प्रसंग आदर्श राजा में आवश्यक शौर्य-गुण को दर्शाते हैं। किंतु यह ध्यातव्य है कि कालिदास के राजाओं का शौर्य कभी भी विनाशकारी अथवा अत्याचारी प्रवृत्ति का नहीं है, अपितु यह धर्म-रक्षा तथा न्याय-स्थापना के उद्देश्य से प्रेरित है।

6.5 न्यायप्रियता तथा प्रजाहित की सर्वोच्चता

राम का सीता-त्याग-प्रसंग—यद्यपि भावनात्मक दृष्टि से अत्यंत पीड़ादायक है—आदर्श राजा के इस गुण को उद्घाटित करता है कि राजा को अपने व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा प्रजा की मान्यता तथा राज्य की मर्यादा को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह गुण आधुनिक "पब्लिक अकाउंटेबिलिटी" (सार्वजनिक उत्तरदायित्व) की अवधारणा से तुलनीय है।

6.6 संयम एवं इंद्रिय-निग्रह

अज का इंदुमती की मृत्यु पर शोक करते हुए भी राजकीय कर्तव्यों का निर्वहन करना, यह दर्शाता है कि आदर्श राजा को अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। मनुस्मृति में भी इंद्रियजय को राजा का प्रमुख गुण बताया गया है (मनुस्मृति, 7.44-45)।

6.7 विनम्रता तथा अहंकार-रहितता

रघु की अपार विजय तथा वैभव के बावजूद उनका विनम्र स्वभाव, तथा राम का सामान्य वनवासी जीवन में भी संतोषपूर्वक निर्वाह करना—ये दोनों प्रसंग यह दर्शाते हैं कि आदर्श राजा को शक्ति तथा वैभव के मद से मुक्त रहना चाहिए।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

6.8 सुयोग्य उत्तराधिकार की व्यवस्था

अज द्वारा दशरथ को तथा दशरथ द्वारा राम को समय पर राज्य सौंपना, यह दर्शाता है कि आदर्श राजा को अपने उत्तराधिकारी को समुचित प्रशिक्षण देकर समय पर राजपद हस्तांतरित करना चाहिए, जिससे राज्य में सत्ता-हस्तांतरण की प्रक्रिया सुचारु रूप से संपन्न हो सके।

6.9 तुलनात्मक सारणी: रघुवंश के प्रमुख राजाओं के गुण

राजा	प्रमुख गुण	प्रमुख प्रसंग
दिलीप	प्रजापालन, आत्मत्याग	नंदिनी-रक्षा हेतु प्राणार्पण
रघु	शौर्य, दानशीलता, विजिगीषा	विश्वजित यज्ञ, कुबेर-प्रसंग
अज	प्रेम, वीरता, संयम	स्वयंवर-युद्ध, इंदुमती-शोक
दशरथ	सत्यनिष्ठा, पश्चाताप-भावना	श्रवण-वध, कैकेयी को वचन
राम	सर्वगुण-संपन्नता, न्यायप्रियता	पितृ-आज्ञा-पालन, सीता-त्याग

यह सारणी स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि यद्यपि प्रत्येक राजा का चरित्र भिन्न प्रसंगों के माध्यम से उद्घाटित होता है, तथापि सभी में एक समान मूल तत्त्व विद्यमान है—प्रजाहित तथा धर्म की सर्वोच्चता।

7. रघुवंश के राजधर्म की समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance of the Rajadharma in Raghuvamsha)

यद्यपि रघुवंश एक प्राचीन संस्कृत महाकाव्य है, तथापि इसमें वर्णित आदर्श राजा के गुण आज भी नेतृत्व तथा शासन-व्यवस्था के लिए प्रासंगिक हैं।

7.1 लोकतांत्रिक शासन में जवाबदेही की अवधारणा

राम का सीता-त्याग-प्रसंग, यद्यपि विवादास्पद है, किंतु यह इस बात का प्रतीक है कि शासक को जनमत तथा सार्वजनिक जवाबदेही के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी यह सिद्धांत—कि शासक जनता के प्रति उत्तरदायी होता है—मौलिक महत्त्व रखता है (मिश्र, 2007)।

7.2 नेतृत्व में विनम्रता तथा सेवा-भाव

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN: 2584-2889
वर्ष 2, अंक 2, जनवरी - मार्च 2025
Online Available: https://shabdasagar.in/

रघु तथा राम के चरित्रों से यह सीख मिलती है कि सच्चा नेतृत्व सत्ता के अहंकार में नहीं, अपितु सेवा-भाव में निहित है। यह अवधारणा आधुनिक "सर्वेंट लीडरशिप" (servant leadership) के सिद्धांत से आश्चर्यजनक रूप से मेल खाती है, जो यह प्रतिपादित करता है कि प्रभावी नेता वह है, जो पहले सेवक बनता है (द्विवेदी, 2010)।

7.3 संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण की अवधारणा

रघु का विश्वजित यज्ञ में संपूर्ण संपत्ति का दान, यह दर्शाता है कि शासक को संसाधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना नहीं रखनी चाहिए, अपितु उन्हें प्रजा-कल्याण के लिए समर्पित करना चाहिए। यह आधुनिक कल्याणकारी राज्य (welfare state) की अवधारणा से समरूपता रखता है।

7.4 पर्यावरणीय तथा प्राकृतिक संतुलन की चेतना

दिलीप द्वारा नंदिनी (गाय) की सेवा तथा प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव, यह संकेत देता है कि प्राचीन भारतीय राजधर्म में पर्यावरण-संरक्षण तथा जीव-मात्र के प्रति करुणा का भाव अंतर्निहित था, जो आज के पारिस्थितिक संकट के युग में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

7.5 सत्ता-हस्तांतरण की सुव्यवस्थित प्रक्रिया

अज तथा दशरथ द्वारा समय पर अपने उत्तराधिकारियों को राज्य सौंपना, यह आधुनिक संगठनात्मक प्रबंधन में "उत्तराधिकार योजना" (succession planning) की अवधारणा से तुलनीय है, जो किसी भी संस्था अथवा राष्ट्र की स्थिरता के लिए अनिवार्य मानी जाती है।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध-पत्र में महाकवि कालिदास के "रघुवंशम्" महाकाव्य में वर्णित आदर्श राजा के गुणों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कालिदास ने दिलीप, रघु, अज, दशरथ तथा राम—इन पाँच प्रमुख राजाओं के चरित्र-चित्रण के माध्यम से आदर्श राजा के विविध आयामों को उद्घाटित किया है। दिलीप का चरित्र प्रजापालन तथा आत्मत्याग का प्रतीक है, रघु शौर्य तथा दानशीलता का, अज प्रेम तथा संयम का, दशरथ सत्यनिष्ठा का, तथा राम इन सभी गुणों के समन्वित तथा सर्वोच्च रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि कालिदास का राजा-चरित्र-चित्रण मात्र काव्यात्मक कल्पना नहीं, अपितु वैदिक, धर्मशास्त्रीय (मनुस्मृति), राजनीतिशास्त्रीय (कौटिल्य अर्थशास्त्र) तथा महाकाव्यात्मक (रामायण-महाभारत) परंपरा से गहराई से

जुड़ा हुआ है। कालिदास ने इन शास्त्रीय सिद्धांतों को सजीव पात्रों के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पाठक न केवल राजधर्म के सैद्धांतिक पक्ष को समझता है, अपितु उससे भावनात्मक रूप से भी जुड़ता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि रघुवंश में चित्रित आदर्श राजा वह है, जो शक्ति और करुणा, वैभव और त्याग, प्रताप और विनम्रता, तथा शासन और सेवा के मध्य संतुलन स्थापित करता है। "प्रजासुखे सुखं राज्ञः" का सिद्धांत रघुवंश के प्रत्येक आदर्श राजा के जीवन में साकार होता प्रतीत होता है। यह अवधारणा न केवल प्राचीन भारतीय राजनीतिक-नैतिक चिंतन की समृद्धि को प्रदर्शित करती है, अपितु समकालीन नेतृत्व तथा शासन-व्यवस्था के लिए भी एक कालातीत आदर्श प्रस्तुत करती है। भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह क्षेत्र और भी विस्तार की संभावना रखता है, विशेषतः रघुवंश के अन्य राजाओं (जैसे कुश, अतिथि आदि) के चरित्रों के तुलनात्मक अध्ययन तथा अन्य समकालीन साहित्य (जैसे भारवि, माघ) में राजधर्म-चित्रण के तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से।

9. संदर्भ सूची (References)

- कालिदास। (सं.)। *रघुवंशम्* (मूल संस्कृत पाठ एवं हिंदी व्याख्या सहित)। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान।
- कंगले, आर. पी. (1965)। *कौटिलीय अर्थशास्त्र* (भाग 1-3)। बम्बई: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- चतुर्वेदी, द्वारिकाप्रसाद। (2011)। *मनुस्मृति: भारतीय ज्ञानपीठ संस्करण* (हिंदी भाष्य सहित)। वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ।
- त्रिपाठी, राधावल्लभ। (2009)। *संस्कृत महाकाव्यों में राजधर्म का स्वरूप*। दिल्ली: राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान।
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद। (2010)। *कालिदास की लौकिक दृष्टि*। इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- पाण्डेय, कपिलदेव। (2012)। *रघुवंश: एक समीक्षात्मक अध्ययन*। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- मिश्र, उमेश। (2007)। *भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा*। इलाहाबाद: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान।
- शर्मा, रामकरण। (2008)। *वैदिक साहित्य में राजतत्त्व की अवधारणा*। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- शुक्ल, रामचंद्र। (2005)। *संस्कृत साहित्य का इतिहास* (हिंदी अनुवाद)। इलाहाबाद: हिंदुस्तानी एकेडमी।
- व्यास (महर्षि)। *महाभारत, शांतिपर्व* (राजधर्मानुशासनपर्व)। गोरखपुर: गीता प्रेस संस्करण।
- वाल्मीकि। *वाल्मीकि रामायण* (मूल संस्कृत सहित हिंदी अनुवाद)। गोरखपुर: गीता प्रेस संस्करण।